अपनी बितक - Part 2
ब्रीज , रास & जागनी

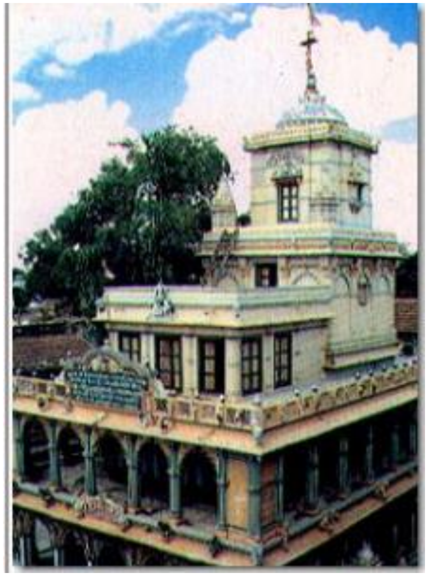

https://nijanand.org/scripture/

Vando Sat-Guru Charan Ko,
Karun So Prem Pranam |
Asubh Haran Mangal Karan,
Dhani Shri Dev-Chandra Ji Naam ||1

Shri Pran-Nath Nij Mool Pati,
Shri Mihiraj Su-Naam |
Tej-Kuvari Shyama Yugal Ko,
Pal Pal Karun Pranam ||2

Shri Pran-Nath Toom Satya Ho,
Toom Se Chalat Jahaaj |
Mein Aadhin Karni Nahin,
Baanha Grahey Ki Laaj ||3

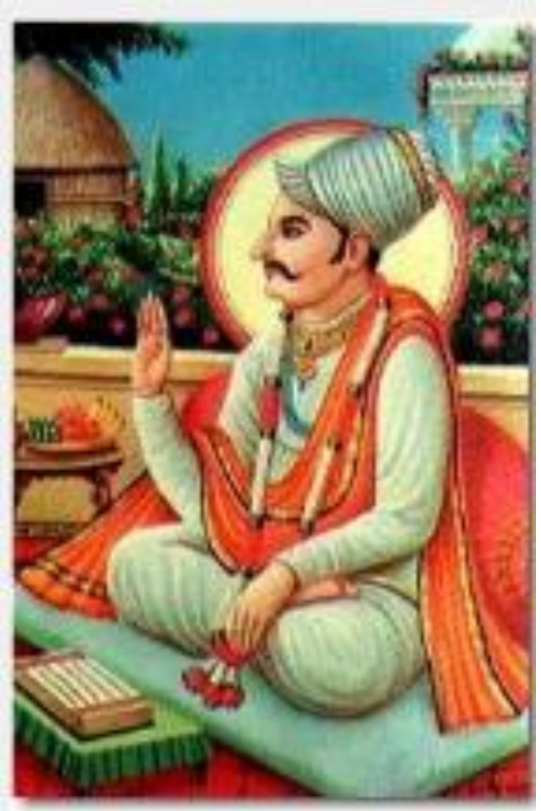

https://nijanand.org/scripture/

श्री महामति कहे ऐ साथ जी, सास्त्र कहें यों कर।
आगे अपनी बीतक, सो लीजे चित धार।।28।।

महाकारण

अब कहों फेर के, मूल मिलावे की बीतक।
जैसी आज्ञा धनी की, सों बातें बुजरक।।१

पहले मूल अद्वैत में, भोम जहाँ इस्क।
तहां प्रेम रवद में, भया हुकम हक।।२

एह खेल देखन की, इच्छा उपजाई दोय।
अक्षर और सैयन को, आदि अनादि फल कहूयो सोय।।३

ताके तीन तकरार कहे, सो भये तीनों इण्ड।
ताकी बीतक जुदी-जुदी, माया मिथ्या नट ब्रह्मांड।।४

पहले अग्यारे बरस, और ऊपर बावन दिन।
काल माया ब्रह्मांड में, खेले मिल निज जन।।५

ता पीछे आये रास में, इण्ड जोगमाया जाग्रत।
जहां विरह विलास दोऊ, देख के फिरे इत।।६

ब्रज-रास दोऊ अखण्ड, कर चेतन बुधि फिरे मन।
ए ब्रह्मांड तीसरा, जहां महम्मद आये रोसन।।७

रास लीला खेल के, आये बरारब में।
तहां बात सब जाहिर करी, चल्या मारग इनसे।।८

छै दिन कुरान में, वाके भए जब।
ता दिनकी हकीकत, सारी छिप कही तब॥ ९

तामें एक दिन वृजमें, दूसरे दिन रास।
एक रात तहाँ खेले, देखे विरह विलास॥ १०

मनोरथ पीछे रहे, तब तीसरो भयो इण्ड।
तामें आए बरारब, आमर फैलाया ब्रह्माण्ड॥ ११

यह है दिन तीसरा, रहे साठ बरस और तीन।
रब्बानी कलाम ल्यायके, सबको दिया यकीन॥ १२

यह कथा बहुत है, विस्तार नहीं सुमार।
पर ए चौथे दिन की, सैयाँ करो विचार॥ १३

जब महम्मद साहिब की, नव सदी वीतक।
सवा नव बाकी रहे, दसमी के बुजरक॥ १४

साल नव सै नब्बे मास नौ, हुये रसूल को जब।
रूहअल्ला मिसल गाजियो, सैयाँ उतरे तब॥ १५

सम्वत सोलह सै अड़तीसे, आसोज सुदी चौदसको।
जन्मदिन श्रीदेवचन्द्रजी, आए प्रगटे मारवाडमों॥ १६

तामें गाम उमरकोट, मतू महेता घर अवतार।
माता जो कुंअरबाई, ताको कहों विस्तार॥ १७

अब कहों फेर के, मूल मिलावे की बीतक।
जैसे आज्ञा धनी की, सो बातें बुजरक।।1।।

- में कॉन ?
- कहाँ से आई ?
- कहाँ है मेरा वतन?
- सब का परमात्मा कॉन है?
- सृस्ति की रचना क्यों हुई ?
- मूल मिलावे की बितक किसिकी है?
- धनी की आज्ञा क्या है?
- स्वलीला अद्वैत क्या है?
- इश रब्द क्या है?
- किसका आदेस हुआ ?
- आदि फल ओर अनादि फल क्या है?
- इश फल देखने की चाहना किसने व्यक्त की ?
- इश फल देखने की चाहना किसके दिल में उपजाई ?
- तीन तकरार क्या है?

महाकारण

अब कहों फेर के, मूल मिलावे की बीतक।
जैसी आज्ञा धनी की, सों बातें बुजरक।।१

पहले मूल अद्वैत में, भोम जहाँ इस्क।
तहां प्रेम रबद में, भया हुकम हक।।२

एह खेल देखन की, इच्छा उपजाई दोय।
अक्षर और सैयन को, आदि अनादि फल कह्यो सोय।।३

स्वलीला अद्धवेत

हद–बेहद से परे वह स्वलीला अद्वैत परमधाम है, जहां के कण–कण में सच्चिदानन्द परब्रह्म की लीला होती है। श्री राज जी, श्यामा जी, सखियां, अक्षरब्रह्म और महालक्ष्मी इन पांचों का एक अद्वैत स्वरूप है। श्यामा जी आनन्द अंग हैं और अक्षरब्रह्म सत् अंग।

- स्वलीला अद्वैत क्या हैं?
- सृस्ति की रचना क्यों हुई
- महाकारण एवं कारण क्या है?
- इश रब्द क्या है?
- किसका आदेस हुआ ?
- आदि फल ओर अनादि फल क्या है?
- इश फल देखने की चाहना किसने व्यक्त की ?
- इश फल देखने की चाहना किसके दिल में उपजाई ?
- धनी की आज्ञा क्या है?

महकारण : कारण का भी कारण

हक हादी अर्स मोमिन, सो तो पेहेले हक दिल मांहें।
जो चीज प्यारी रूह को, ताए हक पल छोड़े नाहें।।
जो मता कह्या दिल मोमिन, सो मोमिन दिल समेत।
सो बसत हक के दिल में, सो हक दिल मता रूह लेत।।
एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क।
सो देखलावने रूहों को, पेहेले दिल में लिया हक।।

खिलवत ६/४३

महाकारण

राजजी ने दिल में यह बात ली की श्यामजी एवं सखियां को में इस बत की पहचान करा दूं की मेरी सखियां के रुप मेरा ही स्वरूप है |
उनके अंदर मेरा हि प्रेम है | एवं अक्षर ब्रहम सात का स्वरूप है

सखियों का स्वयं ओर परमधाम की साहेबी ना जानना

जो पेहेले लई हकें दिल में, पीछे आई मांहे नूर।
तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो कर हुआ जहूर।।

खिलवत ६/४४

कारण

इश्क रबद

अक्षर मन उपजी ए आस, देखों धनी जी को प्रेम विलास।
तब सखियों मन उपजी एह, खेल देखें अक्षर का जेह।।

प्रकास हिन्दुस्तानी ३७/१८

अपनी बितक - ब्रीज , रास & जागनी

https://www.youtube.com/watch?v=gFw9d9wJ6Hg&list=PLF2E54BA2FBD2D80B

ताके तीन तकरार कहे, सो भये तीनों इण्ड।
ताकी बीतक जुदी-जुदी, माया मिथ्या नट ब्रह्मांड।।४

पहले अग्यारे बरस, और ऊपर बावन दिन।
काल माया ब्रह्मांड में, खेले मिल निज जन।।५

ता पीछे आये रास में, इण्ड जोगमाया जाग्रत।
जहां विरह विलास दोऊ, देख के फिरे इत।।६

ब्रज-रास दोऊ अखण्ड, कर चेतन बुधि फिरे मन।
ए ब्रह्मांड तीसरा, जहां महम्मद आये रोसन।।७

रास लीला खेल के, आये बरारब में।
तहां बात सब जाहिर करी, चल्या मारग इनसे।।८

- में कॉन ?
- कहाँ से आई ?
- कहाँ है मेरा वतन?
- सब का परमात्मा कॉन है?
- सृस्ति की रचना क्यों हुई ?
- मूल मिलावे की बितक किसिकी है?
- तीन तकरार क्या है?

1
ब्रीज लीला
11 वर्ष – लीला
52 दिन जूदागी
कालमाया

वलगे विनोदे हमसों, देखते सब जन।
पर कोई ना विचारे उलटा, सब कहें एह निसन।। क.हि. 19/56
बात याकी हम जानें, और हमारी जाने एह।
और कोई ना समझे, ऐ जो अंदर का सनेह।। क.हि. 19/57

2
रास लीला
1 रात्री
योगमाया – केवल ब्रम

कुमारिका हम संग रेहेती, पिउ खेलते सखियन।
मूल सनमंध कुमारकाओं का, या दिन थें उतपन।। क.हि. 19/50

हुकम हक सुभान का, हुआ नूर पर जब।
अंग सबे चेतन हुए, हुई जोगमाया तब।। बड़ी वृत 77/64

प्रतिबिंब ब्रीज लीला
कालमाया
1 रात्री प्रतिबिंब रास लीला ,
11 दिन प्रतिबिंब ब्रीज लीला
7 day गोकुल , 4 day मथुरा

ऐ पिऊ स्वरूप नौतन, नौतन सिनगार।
नेह हमारा नौतन, नौतन आकार।। प्रकाश हि. 31/112

जेटली नहाती कार्तिक कुमारिका, ए वास्ना नहीं उतपन।
ऐनी लज्या लोपावी हरीने वस्तर, तेसूं कीधो वायदो वचन।। रास 5/27

3
अरब लीला
महमद साहेब
जागनी लीला
देवचन्द्रजी
महेराजजी
लालदासजी, छत्रसालजी
हम सब - Now

और कुमारका ब्रजवधु संग जेह, सुरत सबे अक्षर की एह।
जो व्रत करके मिली संग स्याम, मूल अंग याके नहीं धाम।। प्र. हि. 37/36

तुम देखो साथ सुपन में, खेल खेले ज्यों।
एक विधे साथ जागिया, खेल त्यों का त्यों।। 31/36

सोई गोकुल जमूना त्रट,जानों सोई ब्रजवासी।
रास लीला जाने खेल के, इत आये उलासी।। प्र. हि. 31/44

अपनी बितक - ब्रीज & रास एवं प्रतिबिंब रास & ब्रीज लीला

https://www.youtube.com/watch?v=gFw9d9wJ6Hg&list=PLF2E54BA2FBD2D80B

28 ढवापर युग

परमधाम

अक्षरब्रह्म

परमधाम राजजी

श्यामजी , सखियाँ

कालमय

ब्रीज लीला
11 वर्ष – लीला
52 Days जूदागी
कालमाया

राजजी , श्यामजी , सखियाँ

श्री कृष्ण , राधा
&
12000 सखियाँ
(**ब्रजवधु**)
विवाहित गोपियों

अक्षरब्रह्म

24000 **कुमारिका**
कुमारिका गोपियों

रास लीला
1 night
योगमाया केवल ब्रम
रास की रामत
अंतर्ध्यान प्रेममई लीला

राजजी , श्यामजी , सखियाँ
श्री कृष्ण , राधा &
12000 नुरी स्वरूप सखियाँ

अक्षरब्रह्म
24000 कुमारिका
2 कुमारिका on 1 सखि

योगमाय

ब्रीज लीला अखंड
सबलिक कारण
B5

रास लीला अखंड
सबलिक महकरण
B4

28 कलयुग Starting - Before जगनी लीला

प्रतिबिंब रास & ब्रीज लीला
कालमाया
1 प्रतिबिंब रात्री रास लीला ,
11 दिन प्रतिबिंब ब्रीज लीला
7 day गोकुल , 4 day मथुरा

श्री कृष्ण – रास बिहारी
11 दिन

श्री कृष्ण – विष्णु योगेश्वर
100 वर्ष

24000 कुमारिका
सुरता

12000 वेदऋचा
स्वरूप
वेदों के मंत्र
अव्याकृत

अव्यार्कत महकरण
प्रतिबिंब महारास
प्रतिबिंब बृज
B6

छै दिन कुरान में, वाके भए जब ।
ता दिनकी हकीकत, सारी छिप कही तब ॥ ९
तामें एक दिन वृजमें, दूसरे दिन रास ।
एक रात तहाँ खेले, देखे विरह विलास ॥ १०
मनोरथ पीछे रहे, तब तीसरो भयो इण्ड ।
तामें आए बरारब, आमर फैलाया ब्रह्माण्ड ॥ ११
यह है दिन तीसरा, रहे साठ बरस और तीन ।
रब्बानी कलाम ल्यायके, सबको दिया यकीन ॥ १२
यह कथा बहुत है, विस्तार नहीं सुमार ।
पर ए चौथे दिन की, सैयाँ करो विचार ॥ १३
जब महम्मद साहिब की, नव सदी वीतक ।
सवा नव बाकी रहे, दसमी के बुजरक ॥ १४
साल नव सै नब्बे मास नौ, हुये रसूल को जब ।
रूहअल्ला मिसल गाजियो, सैयाँ उतरे तब ॥ १५
सम्वत सोलह सै अड़तीसे, आसोज सुदी चौदसको ।
जन्मदिन श्रीदेवचन्द्रजी, आए प्रगटे मारवाडमों ॥ १६
तामें गाम उमरकोट, मतू महेता घर अवतार ।
माता जो कंअरबाई. ताको कहों विस्तार ॥ १७
जब जन्में मारवाड़में, घर अति आनन्द नरनार ।
यह बधाई ब्रह्माण्ड में, त्रिगुण समेत विस्तार ॥ १८
सुखदाई सबन को, अखण्ड करनहार ।
विस्व वन्दे अक्षरलों, शुके परीक्षितसों कह्यो विचार ॥ १९

ीज लीला
1 ears – लीला
52 Days जूदागी
कालमाया

पिउ पांच बेर हम वास्ते, सागर में डारया आप।
सो नजरों ने आवे प्रेम बिना, बिना मेहेर या मिलाप।। प्र. हि. 17/9

तीन सरूप खुदाए के कहे, तीनो तकरार रूहों बीच रहे।
एक बृज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बूढ़ापन में भोर।।ब.क. 6/28
दोए सरूप कहे मिने और, किल्ली कुरान ल्याए इन ठौर।
पांच सरूप मिले इत नूर, असलू बीज माहें अंकूर।। ब.क. 6/29

2 ास लीला
1 night
योगमाया – केवल ब्रम

श्रीकृष्णजीए ब्रज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टि मन काम।
सोई स्वरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम।। खुलासा 13/75

अरब लीला
महमद साहेब
कुरान
9th सदी
3

ले फुरमान जो हाथ में, केहेलाया मैं रसूल।
ऐ देखों अरवाहें अर्स की, जिन कोई जावें भूल।। सनंध 19/9
हो सैंया फुरमान ल्याये हम, आये वतन से वास्ते तुम।
इसमें खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी।। ब. क. 6/1

जागनी लीला
देवचन्द्रजी
1638 - 1712
10th सदी
4

जागनी लीला
मेहराजजी
1712-1751
11th सदी
5

जागनी लीला
छत्रसालजी
लालदशजी
हम सब - Now
6

अपनी बितक - जगनी लीला

https://www.youtube.com/watch?v=gFw9d9wJ6Hg&list=PLF2E54BA2FBD2D80B

28 कलयुग Starting - Before जगनी लीला

28 कलयुग जगनी लीला - NOW

परमधाम

अक्षरब्रह्म

परमधाम
राजजी

श्यामजी ,
सखियाँ

कालमय

प्रतिबिंब ब्रीज लीला
कालमाया
1 रात्री रास लीला , 7 day गोकुल , 4 day मथुरा

श्री कृष्ण – रास बिहारी
11 दिन

श्री कृष्ण – विष्णु योगेश्वर
112 वर्ष

24000 कुमारिका सुरता

12000 वेदऋचा स्वरूप
वेदों के मंत्र
अव्याकृत

अक्षरब्रह्म
ईश्वरी सृष्टि

राजजी , श्यामजी , सखियाँ
ब्रह्मसृष्टि

अरब लीला
महमद साहेब
कुरान
बशरी ,

जागनी लीला
देवचन्द्रजी
तारतम
मलकी

जागनी लीला
मेहराजजी
वाणी
हकी

जागनी लीला
छत्रसालजी
लालदशजी
हम सब - Now

ब्रह्म् सृष्टि & ईश्वरी सृष्टि
सत स्वरूप

योगमाय

अव्यार्कत महकरण
प्रतिबिंब महारास
प्रतिबिंब बृज
B6

महमद साहेब के
जीव
अखंड
सबलिक निर्मल चेतन
B3

ब्रह्मसृष्टि के जीवों
अखंड
सत स्वरूप निर्मल चेतन
B1

ईश्वरी सृष्टि के जीवों
अखंड
सत स्वरूप महाकारन
B2

जीव सृष्टि के जीवों
अखंड
अव्याकृत कारन & स्थूल
B7 & B8

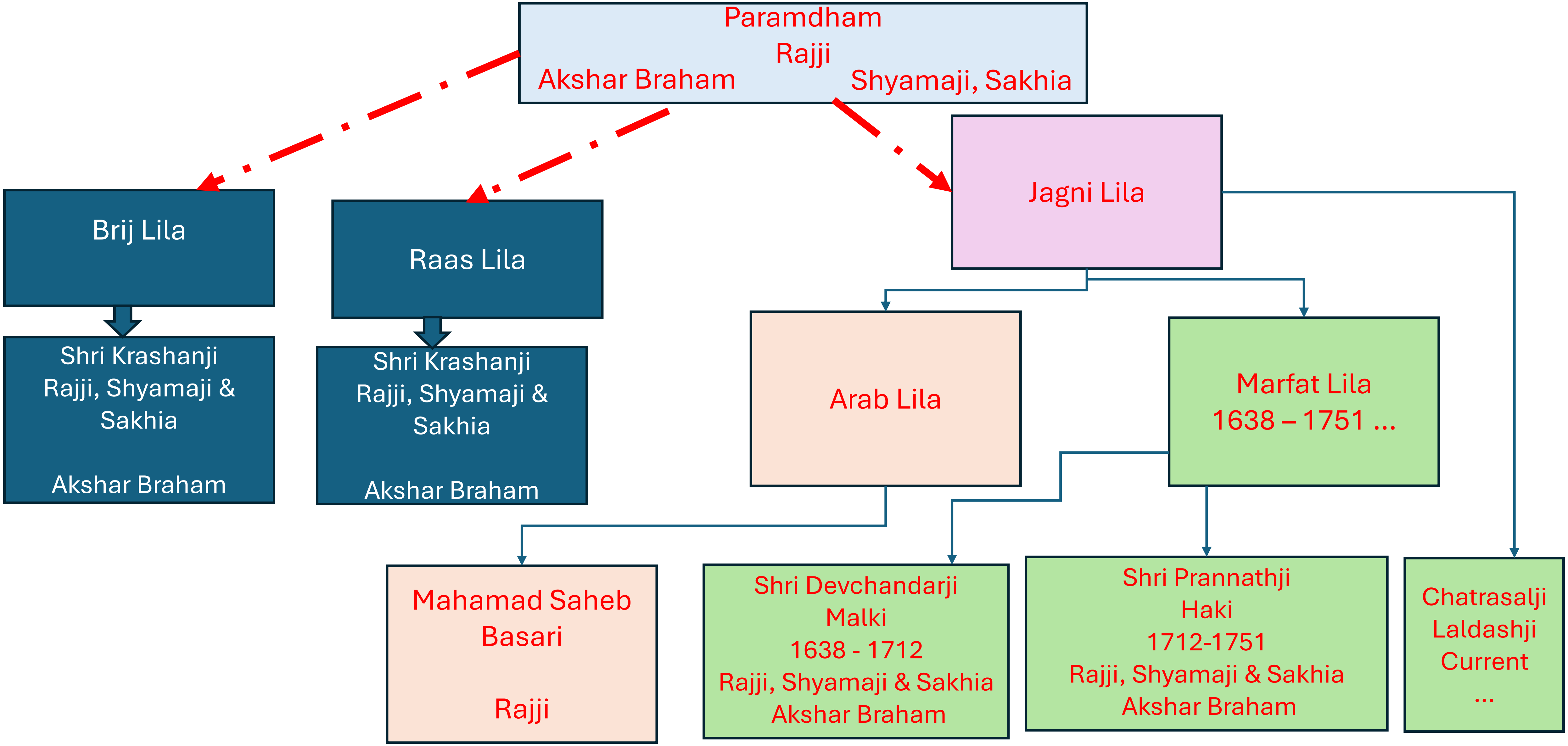
Paramdham
Rajji
Akshar Braham
Shyamaji, Sakhia
Brij Lila
Shri Krashanji
Rajji, Shyamaji &
Sakhia
Akshar Braham
Raas Lila
Shri Krashanji
Rajji, Shyamaji &
Sakhia
Akshar Braham
Jagni Lila
Arab Lila
Marfat Lila
1638 – 1751 …
Mahamad Saheb
Basari
Rajji
Shri Devchandarji
Malki
1638 - 1712
Rajji, Shyamaji & Sakhia
Akshar Braham
Shri Prannathji
Haki
1712-1751
Rajji, Shyamaji & Sakhia
Akshar Braham
Chatrasalji
Laldashji
Current
…

क्षर अक्षर अक्षरतीत

अक्षरातीत ब्रमाद
उतम पुरुष

अक्षर ब्रमाद

क्षर ब्रमाद

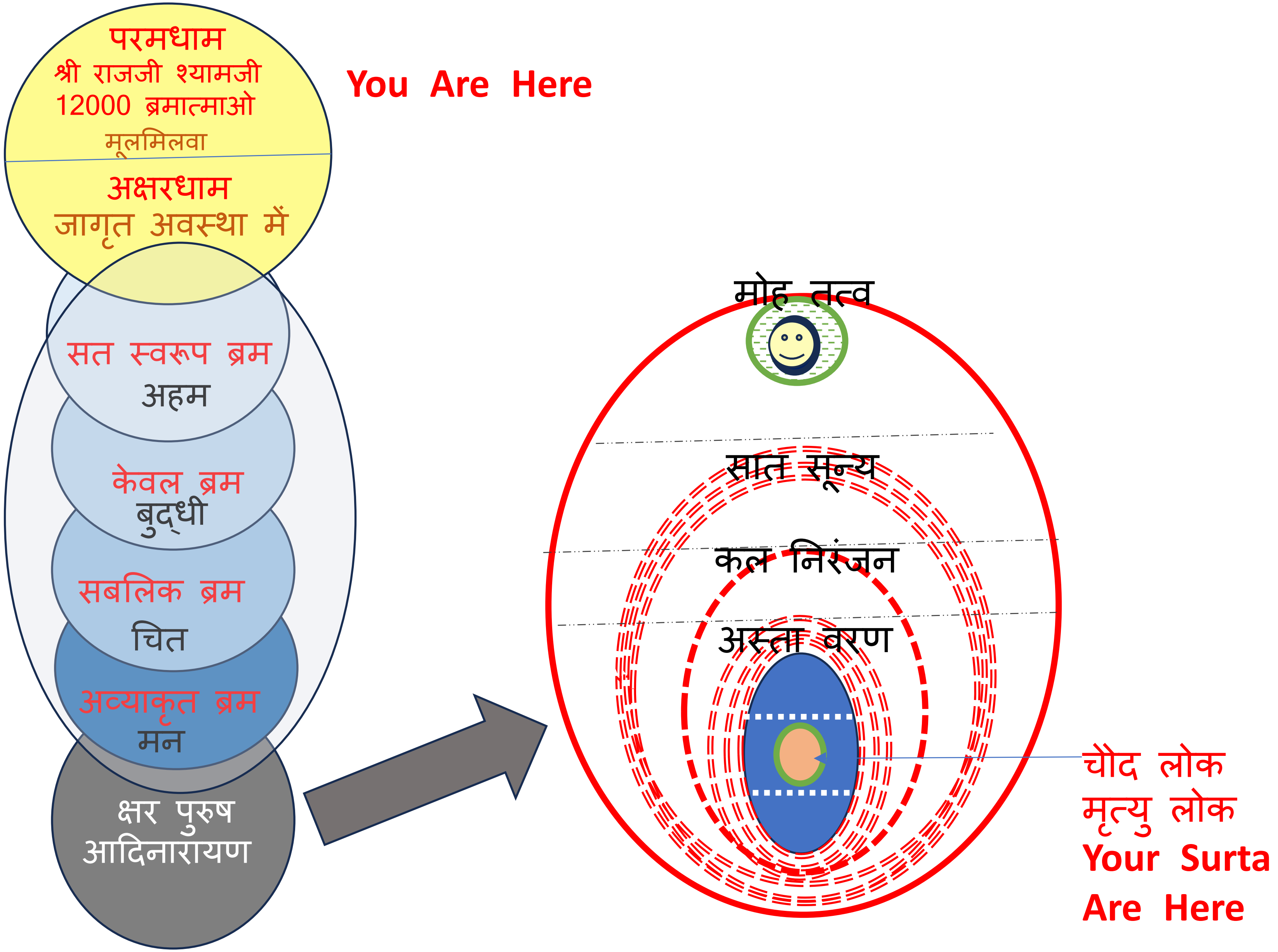

अक्षरातीत ब्रमाद
उतम पुरुष

अक्षर ब्रमाद
योगमाय

क्षर ब्रमाद
कालमाय

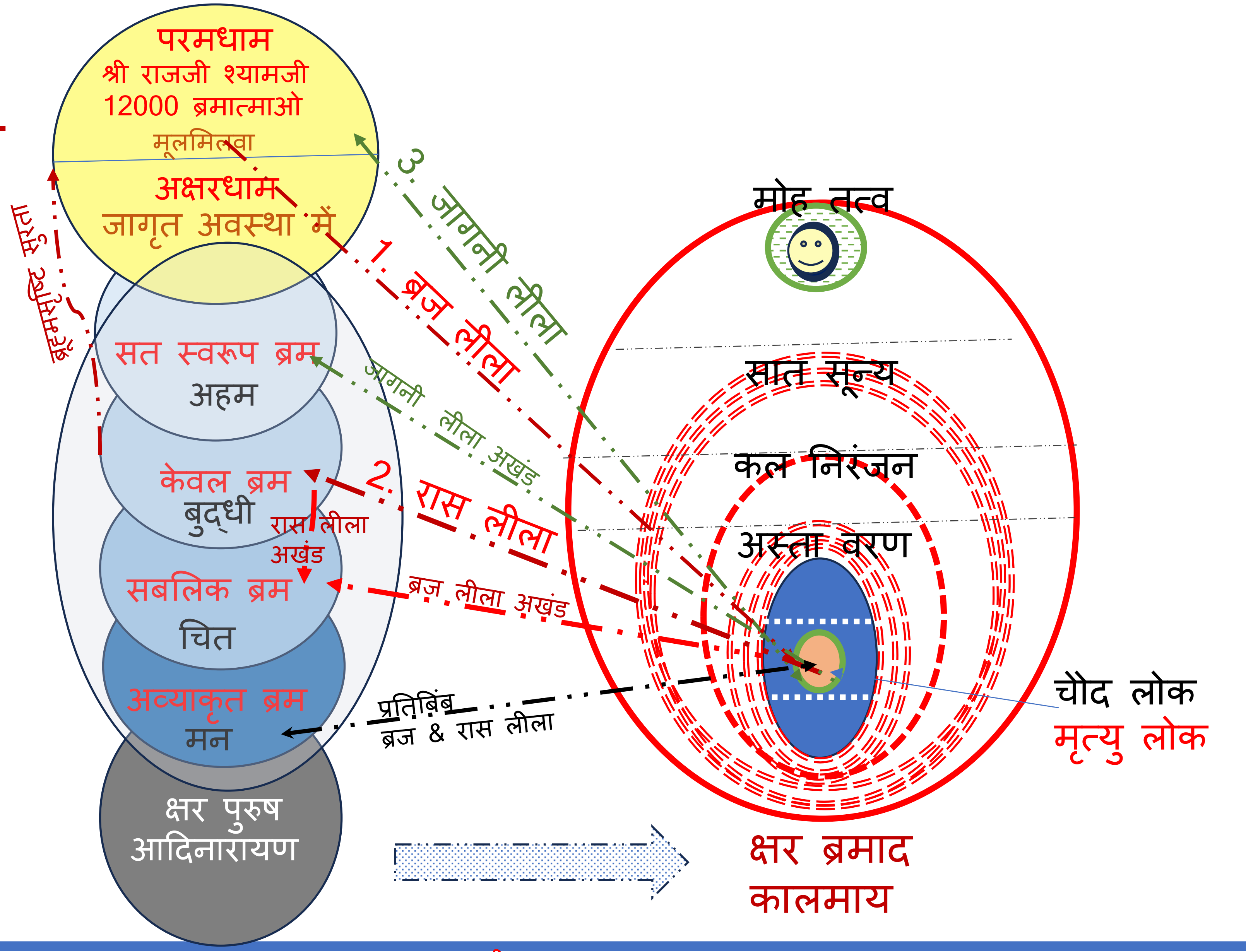

अपनी बितक - अक्षर ब्रम , लीला अखंड & बहिश्त का स्थान

https://www.youtube.com/watch?v=gFw9d9wJ6Hg&list=PLF2E54BA2FBD2D80B

अक्षरातीत ब्रम – परमधाम

अक्षर ब्रम - योगमाय

सत स्वरूप ब्रम
अहं

केवल ब्रम
बुद्धि

सबलिक ब्रम
चित

अव्याकृत ब्रम
मन

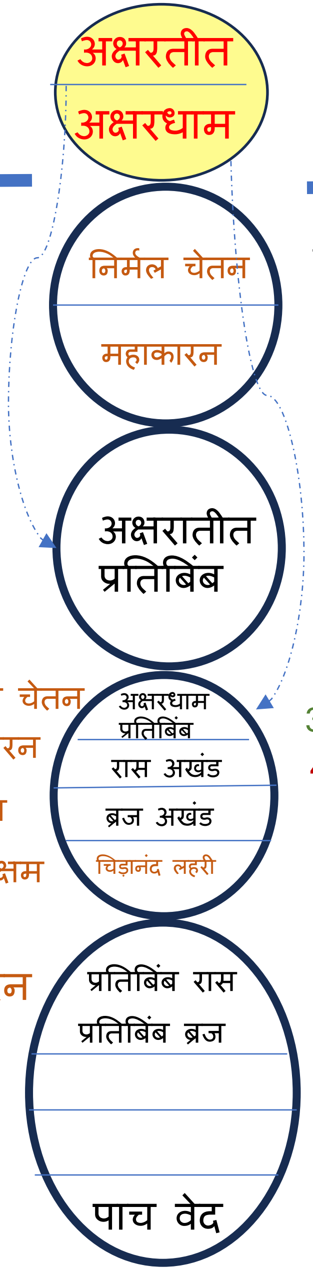

निर्मल चेतन
महाकारन
कारन
सूक्ष्म

रास लीला अखंड
ब्रज लीला अखंड

प्रतिबिंब रास लीला अखंड)
प्रतिबिंब ब्रज लीला अखंड

महाकारन
कारन
सूक्ष्म
स्थूल

पाच वेद – वेदऋचा स्वरूप

1st बहिश्त -जागनी लीला के ब्रूहमसृष्टि के जीवों कि मुक्ति

2nd बहिश्त - जागनी लीला के ईश्वरीष्टि के जीवों कि मुक्ति

3rd बहिश्त (अवल) – महमद साहेब के जीव कि मुक्ति

4th बहिश्त (अवल) -रास लीला के ब्रूहमसृष्टि के नूर जीवों कि मुक्ति

5th बहिश्त - ब्रज लीला के ब्रूहमसृष्टि एवं ईश्वरीष्टि के जीवों कि मुक्ति

6th बहिश्त (अवल) – अक्षर की पाच अवसानओं की मुक्ति
माह विष्णु, शिव, सनकादिक, शुकदेवजी, कबीरजी

7th बहिश्त – जगनी ब्रमाद के पैगंबरों की मुक्ति

8th बहिश्त - जगनी ब्रमाद के जीवों कि मुक्ति

बहिश्त (B): 3,4,5,6 – Done
बहिश्त (B): 1,2,7,8 – कयामत

अपनी बितक - अक्षर ब्रम , लीला अखंड & बहिश्त का स्थान

https://www.youtube.com/watch?v=gFw9d9wJ6Hg&list=PLF2E54BA2FBD2D80B

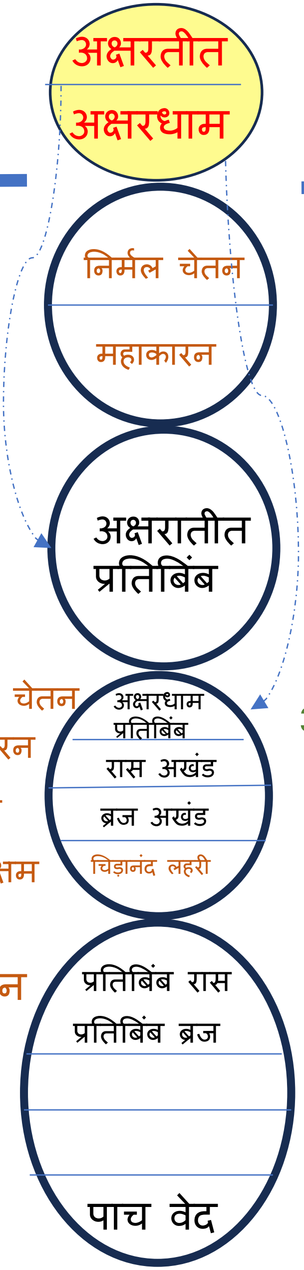

अक्षरातीत ब्रम – परमधाम

अक्षर ब्रम - योगमाय

सत स्वरूप ब्रम
अहं

1st बहिश्त -जागनी लीला के ब्रूह्मसृष्टि के जीवों कि मुक्ति

2nd बहिश्त - जागनी लीला के ईश्वरीष्टि के जीवों कि मुक्ति

केवल ब्रम
बुद्धि

सबलिक ब्रम
चित

रास लीला अखंड
ब्रज लीला अखंड

निर्मल चेतन
महाकारन
कारन
सूक्षम

3rd बहिश्त (अवल) – महमद साहेब के जीव कि मुक्ति

4th बहिश्त (अवल) -रास लीला के ब्रूह्मसृष्टि के नूर जीवों कि मुक्ति

5th बहिश्त - ब्रज लीला के ब्रूह्मसृष्टि एवं ईश्वरीष्टि के जीवों कि मुक्ति

प्रतिबिंब रास लीला अखंड)
प्रतिबिंब ब्रज लीला अखंड

अव्याकृत ब्रम
मन

महाकारन
कारन
सूक्षम
स्थूल

पाच वेद – वेदऋचा स्वरूप

6th बहिश्त (अवल) – अक्षर की पाच अवसानओं की मुक्ति
माह विष्णु, शिव, सनकादिक, शुकदेवजी, कबीरजी

7th बहिश्त – जगनी ब्रमाद के पैगंबरों की मुक्ति

8th बहिश्त - जगनी ब्रमाद के जीवों कि मुक्ति

बहिश्त (B): 3,4,5,6 – Done
बहिश्त (B): 1,2,7,8 – कयामत

Sada Anand Mangal Mein Rahiye

Prayer for True Happiness and Total Wellbeing: For Me, for you and for All

Sada Anand Mangal Mein Rahiye,
Sada Anand Mangal Mein Rahiye | 1

Maha prasaad Aur Charnamrut,
Eh Sukh Sath Mein Payiye || 2

Ishak Surahi Prem Ka Pyala,
Andar Atman Chhaki Rahiye | 3

Tan Sovey Rooh Nish Din Jagey,
Dham Dhani Ke Charno Rahiye || 4

Ashta Pohor Din Chausath Ghadiyan,
Nishdin Piyu Piyu Piyu Kahiye | 5

Chhatrasal Bhajo Dham Dhaniji Ko,
Aur Devan Saun Kya Chahiye || 6

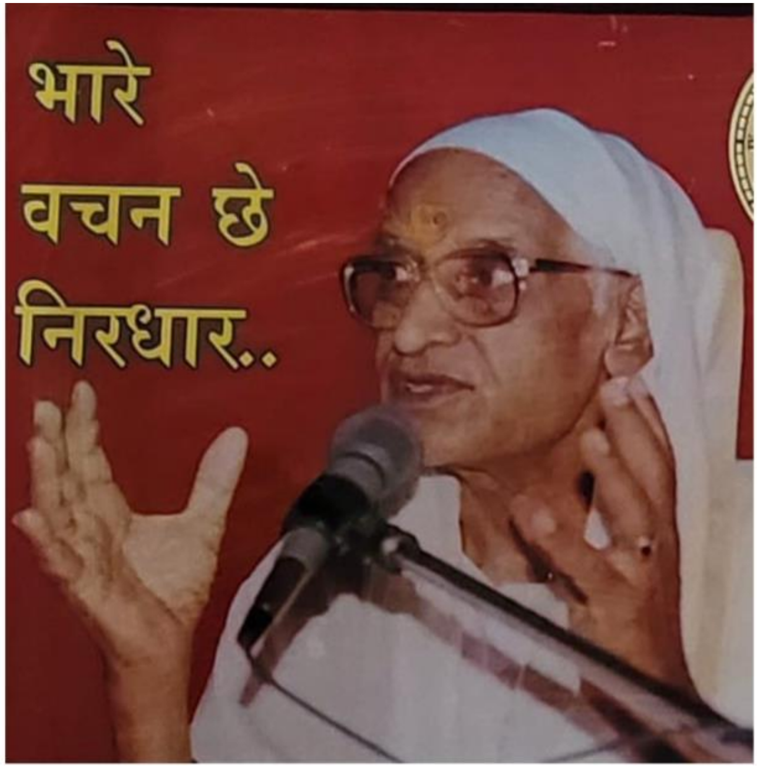

Pranamji – प्रणामजी

https://nijanand.org/wp-content/uploads/2026/05/Shri-Bitak-Sahib.pdf

https://nijanand.org/shri-bitak-saheb-hindi-pujay-sarkarsri/

https://youtu.be/gFw9d9wJ6Hg?si=7XHMDgnrcNuI9oOU